महावीर मन्दिर समाचार

राम-जानकी विवाह-उत्सव

दिनांक 19.12.2020 शनिवार को श्री महावीर मन्दिर पटना के तत्त्वाधान में श्रीरामजानकी विवाह का भव्य आयोजन किया गया। उपस्थित सभी श्रद्धालु अत्यन्त शांत भाव एवं प्रसन्न मुद्रा में बैठे रामजानकी विवाह के प्रदर्शन एवं गायन का भरपूर आनन्द ले रहे थे। मिथिला से परम्परागत श्रीसीताराम विवाह मिथिला मण्डली के द्वारा प्रस्तुत इस द्विदिवसीय कार्यक्रम ने दर्शकों का मन मोह लिया। मिथिला से आये श्री विपिन कुमार ठाकुर के नेतृत्व में तथा व्यास श्री चन्दनाथ चौधरी के रामचरितमानस के गायन से यह कार्यक्रम सुचारु पूर्वक सम्पन्न हुआ। पहले दिन के कार्यक्रम मे जयमाल एवं विवाह प्रमुख रहा। 'झुकि जाऊ तनिक रघुवीर, लली मोरि छोटी सी'। 'मंगलमय दिन आजु हे रघुपति घर आयल'। स्वागत में गाली सुनाउ मोरी सखिया....। "आजु परिछू माई रघुवर के आजु शुभ दिन आयल" 'आनन्द-आनन्द आज शुभे हो शुभे 'कौन नगर के सिन्दुरिया, सिन्दूर बेचे आइल हे। माई हे कौने नगर के कुमारी धिया सिन्दूर बेसाहल हो।' आदि गायन से यह कार्यक्रम सजीव हो उठा।

दूसरे दिन कोहबर, जमनार (दामाद का प्रथम भोजन) तथा बिदाई का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया, जिसमें "श्री कोहबरबा घरवा राजै वरबा चार गुँसइयाँ" तथा "आजु विधना के कतेक गुनमा गाउ हे सखी", "प्रिय पाहुन राज दुलार रुचि सौं जेम लियो।", "तौ पर मैं वारी सँवरिया हो दुलहा" आदि गीतों से भरा वहा कार्यक्रम सबसे आकर्षक रहा। कार्यक्रम के अन्त में बिदाई का भी मार्मिक दृश्य प्रस्तुत किया गया। इस समय श्रीराम चारों भाई अपनी पत्नियों के साथ जनकपुरी से विदा लेते हैं और जनकपुरी की महिलाएँ बिदाई के गीत गातीं हैं। "बड़ा रे जतन सओं सिया धिया पोसलहुँ सेहो रघुवंशी लेने जाये।" तथा "ई हम जनितहुँ सखि श्यामला पहुँनमा से बिहने सबेरे घरबा जैती हो लाल।" आदि भावविभोर करनेवाले गीत गाये गये।

इस पूरे कार्यक्रम को ऑनलाइन मध्यम से हजारों लोगों ने देखा। कोविड-19 के कारण जो लोग कार्यक्रम में सदेह उपस्थित नहीं हो सके थे उन लोगों ने भी इस आनलाइन व्यवस्था पर हर्ष प्रकट किया। कोविड-19 के निर्देशों का का पालन भी कराया गया है।

गीता-जयन्ती का समारोह

दिनांक 25.12.2020 को महावीर मन्दिर परिसर में 4:00 बजे से गीता-जयन्ती का समारोह आयोजित किया गया। मन्दिर के पण्डित श्री सौरभ पाण्डेय गीता से 11वें अध्याय तथा दूरे अध्याय का सस्वर पाठ तथा 'धर्मायण' पत्रिका के सम्पादक प. भवनाथ झा ने उन प्रसंगों की व्याख्या की, जिन्हें मानव जीवन में उतारने पर जीवन सुचारु रूप से सुखमय हो जाता है। प. झा ने कहा

कि गीता के उपदेश व्यवहार में उतारने के लिए है। इसमें सुखमय जीवन के सूत्र दिये गये हैं। यद्यपि कर्म, भक्ति एवं ज्ञान इन तीनों के सम्बन्ध में कहा गया है, किन्तु गीता मूल रूप से कहती है कि कोई व्यक्ति जो कुछ भी करता है, जो खाता है, जो पीता है, वह मुझे अर्थात् ईश्वर को अर्पित करे। गीता सम्पूर्ण समर्पण सिखाती है। यदि हम केवल गीता के इसी उपदेश को मान लें तो जीवन धन्य हो जाये। अतः हम किसी फल के उद्देश्य से कोई कार्य न करें। गीता कर्म करना सिखाती है। गीता कहती है कि आपका जो भी कार्य है, उसे ईश्वर के कार्य के रूप में करें। गीता का थोडा-सा भी मनन-चिन्तन कर लेने से हमारा जीवन उन्नति की ओर अग्रसर होता जायेगा। गीता का ज्ञान अत्यन्त गम्भीर है, अतः इसके जितने भी व्याख्याकार हुए हैं, सबने अलग-अलग दिशा में अलग अलग बातें लिखीं हैं। जिस आचार्य ने जिस दृष्टि से गीता को समझने का प्रयास किया, वे उसे उसी प्रकार समझ सके। लेकिन गीता की यह विशेषता है कि यदि इसकी एक भी बात हम मान लें. उसे अपने जीवन में उतार लें तो हमरा जीवन धन्य हो जायेगा। वह ऐसी गंगा के समान है, जिसकी गहराई में उतरे विना भी हम किनारे बैठकर एक चुल्लू जल पीकर अपनी प्यास बुझा सकते हैं।

महावीर मन्दिर के फेसबुक पर इस पूरे कार्यक्रम को लाइव दिखाया गया, जिसे उस काल में लगभग 4000 लोगों ने देखा। इस पूरे कार्यक्रम को बाद में भी https://www.facebook.com/PatnaMahavirMandir लिंक पर देखा जा सकता है।

अयोध्या में राम-रसोई का भव्य वार्षिक आयोजन

दिनांक 19 दिसम्बर को राम-रसोई का वार्षिक आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 1000 व्यक्तियों ने निःशुल्क भोजन किया। महावीर मन्दिर, पटना के द्वारा यह **राम-रसोई** अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि के ठीक बगल में अवस्थित अमावा राम मन्दिर में आरम्भ किया गया है। इसका शुभारम्भ विगत वर्ष 2019 में श्रीसीताराम विवाह के शुभ अवसर पर हुआ था। एसके अन्तर्गत अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि के दर्शन के लिए बाहर से आने वाले तीर्थयात्रियों को निःशुल्क भोजन कराया जा रहा है। इस अवसर पर महावीर मन्दिर के सचिव आचार्य किशोर कुणाल ने अपने हाथों से तीर्थयात्रियों को भोजन परोसा।

ध्यातव्य है कि महावीर मन्दिर के द्वारा इसी प्रकार की योजना माता जानकी की जन्मस्थली पुनौरा धाम, सीतामढ़ी में भी **सीता -रसोई** के नाम से आरम्भ की गयी है, जो 2019 ई. के रामानन्द जयन्ती के दिन से ही संचालित है। यहाँ भी बाहर से आनेवाले सभी तीर्थयात्रियों को निःशुल्क भोजन कराया जाता है। इससे यहाँ पर्यटन में वृद्धि हुई है।

***

वेदोऽखिलो

मातृभूमि-वन्दना

अथर्ववेद, काण्डसं. 12 सूक्त सं. 1

गताङ्क से

जिस भूमि पर हम वास करते हैं, उसके प्रति हम यदि अपना कर्तव्य निभायें तो हमारी मातृभूमि हमें माता की तरह सब कुछ देती हुई हमारा पोषण करती है। अथर्ववेद का पृथ्वी-सूक्त हमें उन कर्तव्यों को पूरा करने का आदेश देता है। पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर द्वारा अनूदित यह पृथ्वीसूक्त 'धर्मायण' की अंक संख्या 93 से क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

त्वमस्यावपनी जनानामदितिः कामदुघा पप्रथाना।
यत्त ऊनं तत्त आ पूरयाति प्रजापतिः प्रथमजा ऋतस्य ॥61॥

हे हमारी मातृभूमि तू हम सबको सुख देनेवाली है। इसलिए जो तेरे में कमी हो उसे परमेश्वर पूरा करें॥61॥

उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवि प्रसूताः।
दीर्घं न आयुः प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम ॥62॥

हे हमारी मातृभूमि, जो हमलोग तुमसे उत्पन्न हुए हैं, वे नीरोग, दृढ़ाग, दीर्घायु, बुद्धिमान, जागृतिसम्पन्न रहें और मातृभूमि के हित के लिए अपने निज के स्वार्थ का बलि देने में उद्यत रहें, सब भाँति तुम्हारा हित करने में तत्पर रहें॥62॥

भूमे मातर्नि धेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम्।
संविदाना दिवा कवे श्रियां मा धेहि भूत्याम् ॥63॥

हे मातृभूमि, मुझे बुद्धिवान कर और तेरे विषय में प्रतिदिन चिन्ता करनेवाले सूक्ष्म विचारी और दूरदर्शी मनुष्य को मुझे अपनी भूमिगत सम्पत्ति प्राप्त कर देनेवाली हो॥63॥

इस प्रकार कुल 63 मन्त्रोंवाला यह पृथ्वीसूक्त सम्पन्न हुआ।

***

व्रत-पर्व

पौष (पूस), 2077 वि. सं.
31 दिसम्बर, 2020 ई. से 28 जनवरी, 2021 ई.

1. सफला एकादशी, 09 जनवरी 2021ई.

इस दिन फल भोग लगाकर एकादशी व्रत करने का विधान है। फल के साथ होने के कारण इसे सफला कहा गया है। सफला एकादशी की कथा में कहा गया है कि इस दिन व्रत कर पीपल वृक्ष के नीचे विष्णु के नाम से फल अर्पित करना चाहिए।

2. **दशतारकारम्भ, 11 जनवरी 2021 ई.**

इस दिन से 11 जनवरी तक के दिनों को दशतारक कहा गया है। इन दिनों वर्षा, गरज, आँधी, ओला गिरना, बिजली का चमकना आदि लक्षण दीखने से अगले वर्ष बरसात में अच्छी वर्षा की भविष्यवाणी की जाती है। विशेष के लिए इसी अंक में दशतारक पर विवेचन देखें।

3. पौषी अमावस्या, दिनांक 13 जनवरी 2021ई.

4. मकरसंक्रान्ति, 14 जनवरी 2021ई.

इस दिन प्रातःस्नान कर तिल, तिल से बने पदार्थ तथा दही का भोजन करना चाहिए। तिल दान करने का भी विधान है। मिथिला में खिचड़ी, जही, तिलबा, चूड़ालाई, मूढ़ीलाई तथा मगध में चूड़ा, दही, शक्कर की चूरण भूरा, तिलकूटआदि खाने की परम्परा है।

5. गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती, 20जनवरी 2021ई.

6. दशतारकान्त, 21 जनवरी 2021ई.

दशतारकारम्भ में देखें।

7. कर्मदशमी, विश्वकर्मा-जयन्ती, 23 जनवरी 2021ई.

भारत में सामान्य रूप से विश्वकर्मा पूजा 17 सितम्बर को मान लिया गया है, किन्तु शास्त्रीय रूप में इस दिन पौष शुक्ल दशमी को कर्मदशमी के दिन विश्वकर्मा का अवतरण माना जाता है। इस दिन विश्वकर्मा-पूजा की तरह ही पूजा करनी चाहिए।

8. पुत्रदा एकादशी, 24 जनवरी 2021ई.

पौष शुक्ल एकादशी का नाम पुत्रदा एकादशी है। इस दिन व्रत करने से सन्तान की प्राप्ति होना कहा गया है। ध्यान रहे कि संस्कृत में पुत्र शब्द का व्यवहार सामान्य लिंग अर्थात् पुत्र एवं पुत्री दोनों के लिए किया जाता है।

9. नारायण द्वादशी, 25 जनवरी, 2021ई.

पौष मास की यह द्वादशी तिथि बहुत महत्त्वपूर्ण है। एकादशी का व्रत कर प्रातःकाल में यह पूजा की जाती है, जिसके बाद एकादशी की पारणा होती है।

10. शाकम्भरी जयन्ती, पौषी पूर्णिमा, व्रत एवं स्नान-दान, लक्ष्मण संवत् 912 का प्रारम्भ आदि, 28 जनवरी, 2021ई.

पौष मास की पूर्णिमा तिथि में पवित्र नदियों में प्रातःस्नान का विशेष महत्त्व है। देवी की उपासना की परम्परा में अकाल के समय शाक से लोगों का भरण-पोषण करनेवाली शाकम्भरी देवी की उत्पत्रि इसी दिन हुई थी। दुर्गासप्तशती में इनकी कथा दी गयी है। बंगाल के राजा लक्ष्मण सेन ने इस संवत् का प्रारम्भ किया था। मिथिला क्षेत्र में 16वीं शती तक इसी संवत् का प्रचलन था।

***

रामावत संगत से जुड़ें

1) रामानन्दाचार्यजी द्वारा स्थापित सम्प्रदाय का नाम रामावत सम्प्रदाय था। रामानन्द-सम्प्रदाय में साधु और गृहस्थ दोनों होते हैं। किन्तु यह रामावत संगत गृहस्थों के लिए है। रामानन्दाचार्यजी का उद्घोष वाक्य- **'जात-पाँत पूछ नहीं कोय। हरि को भजै सो हरि को होय'** इसका मूल सिद्धान्त है।

2) इस रामावत संगत में यद्यपि सभी प्रमुख देवताओं की पूजा होगी, किन्तु ध्येय देव के रूप में सीताजी, रामजी एवं हनुमानजी होंगे। हनुमानजी को रुद्रावतार मानने के कारण शिव, पार्वती और गणेश की भी पूजा श्रद्धापूर्वक की जायेगी। राम विष्णु भगवान् के अवतार हैं, अतः विष्णु भगवान् और उनके सभी अवतारों के प्रति अतिशय श्रद्धाभाव रखते हुए उनकी भी पूजा होगी। श्रीराम सूर्यवंशी हैं, अतः सूर्य की भी पूजा पूरी श्रद्धा के साथ होगी।

3) इस रामावत-संगत में वेद, उपनिषद् से लेकर भागवत एवं अन्य पुराणों का नियमित अनुशीलन होगा, किन्तु गेय ग्रन्थ के रूप में रामायण (वाल्मीकि, अध्यात्म एवं रामचरितमानस) एवं गीता को सर्वोपरि स्थान मिलेगा। **'जय सियाराम जय हनुमान, संकटमोचन कृपानिधान'** प्रमुख गेय पद होगा।

4) इस संगत के सदस्यों के लिए मांसाहार, मद्यपान, परस्त्री-गमन एवं परद्रव्य-हरण का निषेध रहेगा। रामावत संगत का हर सदस्य परोपकार को प्रवृत्त होगा एवं परपीड़न से बचेगा। हर दिन कम-से-कम एक नेक कार्य करने का प्रयास हर सदस्य करेगा।

5) भगवान् को तुलसी या वैजयन्ती की माला बहुत प्रिय है अतः भक्तों को इसे धारण करना चाहिए। विकल्प में रुद्राक्ष की माला का भी धारण किया जा सकता है। ऊर्ध्वपुण्ड्र या ललाट पर सिन्दूरी लाल टीका (गोलाकार में) करना चाहिए। पूर्व से धारित तिलक, माला आदि पूर्ववत् रहेंगे। स्त्रियाँ मंगलसूत्र-जैसे मांगलिक हार पहनेंगी, किन्तु स्त्री या पुरुष अनावश्यक आडम्बर या धन का प्रदर्शन नहीं करेंगे।

6) स्त्री या पुरुष एक दूसरे से मिलते समय **राम-राम, जय सियाराम**, **जय सीताराम**, हरि -जैसे शब्दों से सम्बोधन करेंगे और हाथ मिलाने की जगह करबद्ध रूप से प्रणाम करेंगें।।

7) रामावत संगत में मन्त्र-दीक्षा की अनूठी परम्परा होगी। जिस भक्त को जिस देवता के मन्त्र से दीक्षित होना है, उस देवता के कुछ मन्त्र लिखकर पात्र में रखे जायेंगे। आरती के पूर्व गीता के निम्नलिखित श्लोक द्वारा भक्त का संकल्प कराने के बाद उस पात्र को हनुमानजीके गर्भगृह में रखा जायेगा।

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।। (गीता, 2.7)

8) आरती के बाद उस भक्त से मन्त्र लिखे पुर्जा में से कोई एक पुर्जा निकालने को कहा जायेगा। भक्त जो पुर्जा निकालेगा, वही उस भक्त का जाप्य-मन्त्र होगा। मन्दिर के पण्डित उस मन्त्र का अर्थ और प्रसंग बतला देंगे, बाद में उसके जप की विधि भी। वही उसकी मन्त्र-दीक्षा होगी। इस विधि में हनुमानजी परम-गुरु होंगे और वह मन्त्र उन्हीं के द्वारा प्रदत्त माना जायेगा। भक्त और भगवान् के बीच कोई अन्य नहीं होगा।

9) रामावत संगत से जुड़ने के लिए कोई शुल्क नहीं है। भक्ति के पथ पर चलते हुए सात्त्विक जीवन-यापन, समदृष्टि और परोपकार करते रहने का संकल्प-पत्र भरना ही दीक्षा-शुल्क है। आपको सिर्फ https://mahavirmandirpatna.org/Ramavat-sangat.html पर जाकर एक फार्म भरना होगा। मन्दिर से सम्पुष्टि मिलते ही आप इसके सदस्य बन जायेंगे।

***